ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.8014 (UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | November - 2016

Review Of Research

काव्यबिंब : अलंकार,प्रतीक, और कल्पना

डॉ. विनयकुमार एस. चौधरी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना :

भारतीय आलोचना में अलंकार को काव्य में स्थान दिया गया है।तो पाश्चात्य आलोचकों ने बिंब को स्थान दिया है। बिंब और अलंकार का लक्ष्य भाव और वस्तु को अधिक सशक्त और सुगम बनाने के लिए प्रयोग होता है।काव्य मे अलंकार कला पक्ष से संबंधित है।बिंब काव्य में विषय वस्तु तथा कला पक्ष से संबंधित है। आचार्य दण्डी के अनुसार अलंकार काव्य का शोभा कारक धर्म है – ''काव्य शोभा कराण् धर्मान अलंकारन् प्रचक्षते।''(आचार्य दंडी:काव्यादर्श अध्याय –2 कारिका– 1 पृ.74) अलंकार की उत्पत्ति वैयाकरणा दो प्रकार से करते है ''अलंकारोतीति अलंकार ''(डॉ.टी.शांतकुमारी : अज्ञेय के काव्य में बिंब– पृ.51) अर्थात जो शुशोभित करता है वह अलंकार है। अथवा 'अलंक्रियतेडनेने त्यलंकारा:' अर्थात जिसके व्दारा किसी की शोभा होती है वह अलंकार है। अलंकार कथन की रोचक,ग्राहय और प्रभाव पूर्ण प्रणाली है। आचार्य शुक्ल के अनुसार ''भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप,गुण और किया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी कभी सहाय्यक होनेवाली युक्ति अलंकार है।''

(आचार्य रामचंद्र शुक्ल : रस मिमांसा पृष्ठ– 358) इस परिभाषा के अनुसार शुक्ल जी अलंकार को साध्य नहीं साधन मानते हैं।

अलंकार के दो प्रमुख भेद हैं – शब्दालंकार तथा अर्थालंकार । अर्थालंकार भावों की अभिव्यक्ति को सुगम बनाते है। इसीलिए बिंब विधान से उसका संबंध है। भारतीय अलंकारिकों ने दृष्टांत और निदर्शन अलकांरों में बिंब शब्द का प्रयोग किया है। दृष्टांत के संबंध में कहा गया है कि उपमेय, उपमान और साधारण धर्म का बिंब – प्रतिबिंब भाव होता है। वहाँ दृष्टांत अलंकार होता है ''दृष्टांतस्तु से धर्मस्य वस्तुतः प्रतिबिम्बम्'' (डॉ. गीता अस्थाना : केदारनाथ सिंह के काव्य में बिम्ब विधान –पृष्ठ 18)

'निदर्शना' के संदर्भ में कहा गया है कि, जहाँ वस्तुओं का परस्पर संबंध बिंब प्रतिबिंब भाव का बोध करे वहाँ निदर्शना अलंकार की सृष्टि होती है।''यत्र बिम्बानु बिम्बत्वम बोधयेत सा निदर्शन ।'' (डॉ. गीता अस्थाना : केदारनाथसिंह के काव्य में बिंब विधान पृ.19)

निदर्शना अलंकार में बिंब – प्रतिबिंब शब्द का प्रयोग किया गया है। इन दोनों में जो अप्रस्तुत विधान किया गया है उसे प्रस्तुत का रूप और उससे अभिव्यक्त विचारों दोनों का संप्रेशन हो जाता है। भारतीय अलंकारिकों ने सादृश्य मूलक अलंकारों में बिंब को उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि के समीप माना है। सादृश्यमूलक अलंकारों में जिस अप्रस्तुत विधान का प्रयोग किया है वह बिंब के अधिक निकट हुआ करता है। एक अप्रस्तुत विषय होता है और उसे ग्राहय बनाने के लिए रचनाकार कल्पना जगत में अप्रस्तुत का विधान करता है। उससे बिंब की रचना होती है। पाश्चात्य विद्वानों और भारतीय अलंकारिकों का अप्रस्तुत विधान दोनों एक नहीं है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, विशेषण,विपर्यय आदि अलंकार एक ओर सीमा और नियमों में बंधे रहते है, वहाँ बिंब इन नियमों और बंधनो से मुक्त है। बिंब का उद्देश्य ऐंद्रिय गम्यता और सादृश्यता है। जब कि अलंकारों का मात्र सादृश्यता बिंब के लिए संदर्भ आवश्यक होता है और अलंकार के लिए आवश्यक नहीं। दोनों की निर्माण प्रक्रिया में अंतर यह है कि बिंब मन के उपचेतन स्तर से निर्मित होते है, जबकि कुछ सादृश्य गर्भमूलक अलंकार विशेष रूप से उपमा,रूपक,उत्प्रेक्षा को छोडकर सभी का निर्माण चेतन स्तर से होता है। साथ ही तर्क,बुध्दी और विवेक भी उसके निर्माण में अनिवार्य सहयोग देते हैं। बिंब का एक प्रमुख गुण प्रत्यक्षिकरण होता है उसके विपरित साम्यमूलक और विरोध मूलक अलंकारों को छोड शेष सभी अलंकारों का

चमत्कारपूर्ण ग्रहण होता हैं। इसीलिए अलंकार अनुभूति की मार्मिकता की वृध्दि में सहायक नहीं हो पाता। जब कि संवेगन शीलता बिंब का एक प्रमुख गुण है। बिंब में संश्लिष्टता का गुण होता है। जिससे वह काव्य के समस्त अवयवों को संश्लिष्ट रूप से अभिव्यक्त कर पाता है। फलतः इसके व्दारा मानवीय अनुभूतियों, तणावों, संवेदनाओं आदि को अभिव्यक्ति मिल पाती है। तो अलंकार में ऐसा नहीं होता। अलंकार बिंब की तरह किसी भाव व्दारा कोई चित्र का निर्माण करते हैं उनके व्दारा ध्वनि और दृश्यचित्र तो निर्मित किए जा सकते हैं।किन्तु शेष इंद्रियों से संबंधित चित्र नहीं। उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कह सकते हैं कि, अलंकार और बिंब का कोई संबंध नहीं है। परंतु दोनों का गहरा संबंध है। बिंब अलंकार का विकास है। डॉ केदारनाथ सिंह ने कहा है – ''व्यापक दृष्टि से अलंकार बिंब विधान से भिन्न नहीं उसी के अंतर्गत है। यह प्राचीन औपम्य विधान का ही विकास है। जिसने आज की कविता में बिंब की साँचे में एक अधिक जटिल और मनोवैज्ञानिक रूप ले लिया है।''(डॉ. केदारनाथ सिंह : आधुनिक कविता में बिंब विधान पृ.42)

• बिंब और रूपक

आधुनिक आलोचना में रूपक (मेटॅफर) प्रायःबिंब के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है बिंब सिध्दांत प्रमुख व्याख्याता सी.डी.लेविस ने – 'दी पोयोटिक इमेज'में ''बिंब और रूपक का प्रयोग यद्यपि समान अर्थो में ही किया है। फिर भी बिंब और रूपक में एक सुक्ष्म अंतर यह है कि बिंब स्वच्छंद होने के कारण अनिवार्यता प्रतिकात्मक होता है। जब कि रूपक के लिए यह आवश्यक नहीं है।'' (डॉ. गीता अस्थानाः केदारनाथसिंह के काव्य में बिंब विधान पृ.20) डॉ.सुधा सक्सेना ने जायसी की बिंब योजना में लिखा है – ''बिंबों का कार्य काव्य का अलंकरण भी होता है, अंतरिक भावों की अभिव्यंजना के साथ बिंब काव्य की रूप सज्जा में भी सहायता करते हैं।'' (डॉ. धर्मशाला भुवालका – काव्य बिंब और कामायनी की बिंब योजना पृ.41) बिंब प्रधान भाषा अलंकारिक हो जाती है। यद्यपि अलंकारिकता बिंब का प्रधान गुण नहीं। फिर भी बिंब रूप सज्जा में वृध्दि तो करते ही है। अधिकांश अर्थालंकार बिंबात्मक या चित्रात्मक होते हैं।

डॉ. नग्रेंद्र के अनुसार – ''अलंकार और बिंब का संबंध और भी गहरा है। यहाँ तक की अलंकार विधान और बिंब विधान दोनों प्रायः अप्रस्तुत विधान के वाचक और परस्पर समानार्थक बन जाते हैं। फिर भी अलंकार और बिंब दोनों में भेद है। ..... सहजानुभूति वास्तव में आत्मा की वह क्रिया है जो बिंब का उत्पादन करती है। किसी भी पदार्थ सहजानुभूति मनुष्य को बिंब रूप में होती है। अतःक्रिया रूप में सहजानुभूति और बिंब में अभेद्य संबंध है। ..... रूपक लक्षणा के प्रयोग का पर्याय है। वह बिंब का साधन है'' (डॉ. धर्मशीला मुवालकाः काव्य बिंब और कामायनी की बिंब योजना पृ.41)

रूपक की तुलना में बिंब का क्षेत्र व्यापक होता है सादृश्य विधान के सभी रूप इसके अंतर्गत आ जाते है जिसमें रूपक भी आ जाता है। काव्य बिंब समग्र कविता है तो रूपक उसकी सौंदर्य वृध्दि का उपकरण मात्र है। काव्य बिंब अपनी सफलता के लिए रूपक का अपेक्षी नहीं होता। जबकि रूपक की चरम सार्थकता काव्य बिंब निर्माण के लिए समर्पित हो जाने में है। काव्य बिंब स्वयं साध्य है जबकि रूपक उसकी सिध्दी का एक प्रमुख साधन। काव्य बिंब राग का रूपांतरण है जबकि रूपक रागानुकूल बाहयार्थ के व्दारा राग की सांद्रता को प्रकट करनेवाला प्रमुख माध्यम – कहीं–कहीं अनिवार्य माध्यम भी। रूपक में भाव – घनता होते हुए भी वह भाव की उस विशदता एवं संपूर्णता का स्पर्श नहीं करता जो बिंब का प्राण है। काव्य – बिंब जीवन की व्यापकता का एक पूर्ण चित्र उभारता है और इसके लिए अप्रस्तुत योजना तथा प्रस्तुत विभावन व्यापार दोनों का उसमें समाहार रहता है। जब कि बिंब एक विशेष सांद्र अनुभूति को उसके घनत्व के साथ प्रक्षेपित करता है और यही कारण है कि उसमें प्रस्तुत विभावन व्यापार के लिए कोई स्थान नहीं रहता। औचित्य के शासन में उभरनेवाला काव्य बिंब

राग, ऐंद्रियता,अप्रस्तुत विधान आदि की सामयिक अन्विति है जो एक संपूर्ण व्यापार के रूप में कवि व्दारा प्रेषित होता है। रूपक केवल एक विशिष्ट खंड दृष्टि है– साधनभूत साध्य समर्पित एक श्रेष्ठ सामग्री है।

बिंम्ब और प्रतीक :

बिंम्ब और प्रतीक काव्याभिव्यक्ति के साधन है। दोनों की प्रस्तुति मानव कल्पना से होती है। वे काव्य के सौदंर्य को बढाते है। लेकिन दोनों में रूप तथा प्रभाव की दृष्टि से भेद है। प्रतीक शब्द संस्कृत के 'प्रतिअंच' शब्द से उत्पन्न है। जिसका अर्थ है–''एक वस्तु के लिए किसी अन्य वस्तु की स्थापना।'' (मृदुल जोशी : नयी कविता में बिंब विधान पृ.85) दूसरा विचार यह है कि 'प्रति + इक'से उत्पन्न है। जिसका अर्थ है अपनी ओर झुका हुआ। जब किसी वस्तु का केई अंश पहले गोचर होता है फिर बाद में संपूर्ण वस्तु का ज्ञान होता है तब उस वस्तु को प्रतीक कहते हैं। प्रतीक शब्द 'प्रति' पूर्वगमनार्थक 'इण' धातु से बना है। इसका अर्थ चलना,प्राप्ति या पहुंचना और ज्ञान है। तिसरे मत के अनुसार 'प्रकृष्टम' तीकने इसे प्रतीकम – अर्थज्ञान या अर्थ प्राप्ति करनेवाले शब्द प्रतीक है। प्रतीक शब्द अंग्रेजी (symbol)के शब्द का समानार्थी है। यह प्रयोग स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ है।

प्रतीक शब्द की व्याख्या पाश्चात्य साहित्य में हुयी है 'एनसायक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में प्रतीक के लिए – '' अमूर्त का मूर्त व्दारा प्रस्तुति करण कहा गया है। जॉर्ज वेली के अनुसार – प्रतीक उस प्रधान वस्तु के लिए प्रस्तुत होता है जो काव्य में प्रमुख और विशेष अर्थयुक्त होता है। (डॉ.टी.शांतकुमारी : अज्ञेय के काव्य में बिंब पृ.55) प्रतीक का प्रयोग काव्य वस्तु को विशिष्ट प्रकार से प्रस्तुत करने के लिए होता है। वह अमूर्त को मूर्त तथा अरूप को रूप देता है। हिंदी साहित्यकोश में प्रतीक शब्द की व्याख्या इसप्रकार की है – ''प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य विषय का प्रति विधान है। उसके साथ अपने साहय्य के कारण करती है। यह प्रति विधान मूर्त,दृश्य,श्रव्य,प्रस्तुत विषय व्दारा किया जाता है। (डॉ. धीरेंद्र वर्मा:संपा.हिंदी साहित्य कोरा भाग 1 पृ.317) कवि अपने भावाभिव्यक्ति को सहज, सरल और बोधगम्य बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग काव्य में करता है। प्रतिक के सहारे कविभाव अनुभूति और कल्पना के सुंदर चित्र रचकर काव्य को रसमय बनाता है। और उसके उत्कर्ष की वृध्दि करता है। कवि अपने अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए साधारण भाषा को असमर्थ पाता है तो प्रतीकों का सहारा लेता है। इसी बात को डॉ. रामरतन सिंह 'भ्रमर' कहते हैं ''अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में जहाँ साधारण भाषा असमर्थ होती है वहाँ प्रतीकों की योजना की जाती है।'' (डॉ.रामरतन सिंह 'भ्रमर':आधुनिक हिंदी कविता में चित्र विधान पृ.17) प्रतीक का अर्थ प्रयुक्ता के आधार पर रहता है वह व्यक्ति की अनुभूति पर निर्भर रहता है।

प्रतीक बिंब का सबसे निकटवर्ती शब्द है। प्रायः विचारकों ने प्रतीक और बिंब में बहुत अधिक अंतर नहीं माना है। प्रतीक और बिंब दोनों ही उद्‌गम की दृष्टि से ऐंद्रिय बोध से प्रत्यक्षतः संबंधित रहते है। प्रत्येक प्रतीक अपने मूल में बिंब होता है और क्रमशः विकसित होते हुए प्रतीक बन जाता है। उसी तरह प्रत्येक बिंब अपने प्रभाव में चाहे जितना ऐंद्रिय और संवेगात्मक हो पर अंतः उसकी परिणती किसी प्रतीकात्मक अर्थ की व्यंजना में होती है। मोरिस वेट्‌ज के अनुसार – ''जब कवि किसी बिंब के विशेष अर्थ को प्रकट करता हुआ या उस अर्थ को भावक के लिए व्याख्यायित करता हुआ उस बिंब पर विशेष बल देता है, तब इस प्रमुखता के कारण हीवह प्रतीक बन जाता है। (डॉ. धर्मशीला भुवालका : काव्य बिम्ब और कामायनी की बिम्ब योजना पृ.–32) डॉ. भागीरथ मिश्र के शब्दों में – ''बिंब विधान के अंतर्गत चित्रात्मकता या प्रत्यक्षीकरण की प्रवृत्ति के कारण जो सहज संवेदग्धता रहती है, प्रतीक विधान में उसका अभाव रहता है। प्रतीक केवल संकेत करता है, जबकि बिंब उसे पूर्णतया प्रत्यक्ष और ग्राहय बना देता है.................।(डॉ. भागीरथ मिश्र : काव्यशास्त्र पृ.– 296)

प्रतीक और बिंब के गहरे संबंध को डॉ. नगेंद्र के शब्दों में – इस तरह समझा जा सकता है – ''प्रतीक एक प्रकार से रूढ उपमान का ही दूसरा नाम है। जब उपमान स्वतंत्र्य न रहकर पदार्थ के लिए रूढ हो जाता है तो वह प्रतीक बन सकता है। इसी प्रकार प्रत्येक प्रतीक अपने मूल रूप में बिंब होता है। धीरे–धीरे उनका बिंब रूप या चित्र रूप संचरनशील न रहकर स्थीर या अचल हो जाता है। अतः प्रतीक एक प्रकार अचल बिंब है। जिसके आयाम सिमटकर बंद हो जाते है (डॉ.नगेंद्रः आस्था के चरण पृ.136) बिंब में समग्रता का गुण होता है प्रतीक में नहीं किन्तु प्रतीक की सांकेतिकता भावों में तीव्रता लाने की शक्ति रखती है। किन्तु भावों की वह समग्रता बिंब के अभाव में नही आ सकती। इसी तरह किसी भाव में प्रतीक तीव्रता और भावनात्मक गहराई ला सकता है और बिंब समग्रता। इसलिए उच्च कोटि की रचनाओं में प्रतीक और बिंब दोनों का ही प्रयोग साथ – साथ किया जाता है। बिंब और प्रतीक के उद्‌गम में अंतर है। प्रतीक का उद्‌गम जातिय चेतना और बिंब का उद्‌गत,व्यक्ति की चेतना में रहता है। बिंब का चयन भ्रम और भावना पर आधारित होता है। प्रतीक का चयन और ग्रहण बौध्दिकता और तार्किकता पर आधारित रहता है। प्रतीक अपेक्षाकृत चेतना मन की सृष्टि होती है। या अधिक से अधिकवह उपचेतना के उपरी स्तर की सृष्टि हो सकता है। जबकि बिंब उपचेतन स्तर की सृष्टि होती है।

बिंब स्वच्छंद और अनेकार्थ व्यंजक तथा प्रतीक निश्चित और एकार्थी होता है। प्रतीक एक ऐतिहासिक जीवन प्रवाह की अपेक्षा रखता है। निरंतर प्रयुक्त होने के कारण वह निश्चित अर्थ ग्रहण कर लेता है। इसके विपरित बिंब आकस्मिक होते हैं। उपरोक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि बिंब और प्रतीक का आंतरिक संबंध गहरा होते हुए भी उनकी स्थिती एक दूसरे से स्वतंत्र्य है।

• बिम्ब और कल्पना

कल्पना शब्द 'क्लृप' धातु से उत्पन्न है। जिसका अर्थ है 'सृष्टि करना या बनाना' कल्पना अंग्रेजी Imagination के शब्द का समानार्थक शब्द है। Imagination शब्द लॅटिन भाषा के Imaginato शब्द से व्युत्पन्न है। जिसका अर्थ है – सृष्टि करना। Image के शब्द और Imagination के पारस्पारिक संबंध से ही यह प्रमाणित है कि कल्पना और बिंब का सदृढ संबंध है। पाश्चात्य विद्‌वानों ने कल्पना को भाव तत्त्व के समान महत्त्व दिया। शैली जैसे पाश्चात्य कवियों ने कविता को कल्पना की अभिव्यक्ति माना है। ब्लैक के अनुसार कल्पना वह दिव्य शक्ति है जो कविता को कविता बनाती है। कल्पना की शक्ति अनंत और असीम है। वह दृश्य संबंध वृत्ति है। लेकिन कवि की कल्पना जनसाधारण की सामान्य कल्पना से अलग है। साधारण की अपेक्षा कवि की कल्पना सृजनात्मक होती है। वह अनुभूतियों का संयोजन करके साधारण असाधारण और व्यक्ति अनुभूति को व्यापक अनुभूति बनाता है। कल्पना बिंब निर्माण, अलंकार योजना, पाठकों व्दारा काव्यस्वादन, शिल्पगत योजना, मौलिक कार्यो का सृजन करती है। वह विरोधी भावों का संयोजन भी करती है। वह काव्य सृजन के आदि से अंत तक योगदान देती है। वह तीनों कालों को एक सुत्र में बांधती है। शब्द शक्तियों का नियोजन करती है। विषय वस्तु को जोडकर व्यापकता और गहराई प्रदान करती है। रचनाकार के व्यक्तित्व को बनाती है। कल्पना में रचनात्मक अतिशयोक्ति भी है और यथार्थ के कलात्मक पुनर्निमाण की शक्ति भी है। वह रचना के बाहय और अभ्यंतर भी है। काव्य रचना प्रक्रिया में वह सर्वत्र रहती है। इतना ही नहीं रचना की निर्मिती के बाद भी सहृदय पाठकों तक जाति है। आचार्य शुक्ल जी ने ''कल्पना को काव्य सृजन का महत्त्वपूर्ण उपादान मानकर उसके चार प्रमुख कार्य निर्दिष्ट किये हैं।

- ''रूपविधान करना।
- मन के भीतर लोकोत्तर उत्कर्ष की झॉंकियॉं प्रस्तुत करना।

- अप्रस्तुत योजना करना।
- भाषा शैली को अधिक व्यंजक, मार्मिक और चमत्कार पूर्ण बनाना।
  (आचार्य रामचंद्र शुक्ल चिंतामणी भाग –1 पृ.182)

काव्य की संप्रेशनियता में बिंब का महत्त्व है। भारतीय और पाश्चात्य आलोचकों ने इसका विस्तृत विवेचन किया है। यद्यपि काव्य के बाहय पक्ष के सभी तत्त्वों में सादृश्य विधान, प्रतीक विधान आदि में कल्पना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। लेकिन बिंब निर्माण पूर्णतः कल्पना का कार्य है। कवि कल्पना ही काव्य सृजन की प्रबल प्रेरणा पाकर बिंब के माध्यम से आकर ग्रहण करती है। '' रोबिन स्केल्टन ने बिंब निर्माण में कल्पना के तीन स्तर माने हैं। 1)ललित कल्पना 2) कल्पना 3) पश्चंति कल्पना।''(डॉ. टी. शांतकुमारी : अज्ञेय के काव्य में बिम्ब पृ.54)

बिंब निर्माण की आरंभिक अवस्था से लेकर उसके रूपायन के अंतिम स्तर तक कल्पना महत्त्वपूर्ण योगदान देती रहती है। वह कवि मानस के भावों को आकार देकर बिंब का सृजन करती है। और उसका समग्र विकास करके उसे संप्रेशनिय बनाती है। कल्पना बिंब की जननी है। कुल मिलाकर अलंकार, प्रतीक और कल्पना बिंब नामक सागर को मिलनेवाली नदिया जैसी है जो मिलकर भी अपना अलग अस्तित्व रखती हैं।

आधुनिक काल के काव्य का केंद्र बिंदू बिंब है। वह कवि के सौंदर्य और भाव चेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। बिम्ब बोलचाल की भाषा को पुनर्जीवित करता है। अमूर्त विचारों को मूर्त बनाता है। इसीलिए आधुनिक काल की कविता में बिम्ब निर्माण अनिवार्य बन गया है। संसार की विभन्न रूपों से बिम्ब का संबंध है। बिम्ब का क्षेत्र व्यापक है। इसीलिए उसका वर्गीकरण का विषय अत्यंत जटिल है। डॉ. गोविंद व्दिवेदी का कथन सत्य ही है कि '' कविता में बिम्ब इतने सपाट नहीं होते की उसके चारों तरफ किसी एक भेद की स्पष्ट रेखाएँ खींची जा सकें। काव्य बिम्ब को अलोचना की सुविधा के लिए अनेक वर्गों में बाँटा गया है। किसी ने कार्य, किसी ने ऐंद्रियता, वस्तु,भाव गति के आधार पर बिम्ब वर्गीकरण का प्रयास किया है। इनमें से कोई भी वर्गीकरण सफल नहीं माना जा सकता परंतु इतना अवश्य है कि इनके व्दारा बिम्बों को एक सीम तक समझ सकते हैं।